17. दादी जी के महावाक्य

मैं तो सदैव इस संगम समय का गुण गाती। भाग्यविधाता ने संगम की यह अमूल्य घड़ियाँ दी हैं, जिन घड़ियों में बाबा हमें प्युअर डायमंड बनाता। जब हम प्युअर डायमंड हैं तो फिर यह क्यों सोचते कि अभी तक फ्ला है। फिर डायमंड का मजा कब लेंगे? डायमंड का वैल्यू अभी है, उसका सुख अभी लेना है।

अभी ही कर्मातीत स्थिति का अनुभव करना है। अंत में थोड़े ही कर सकेंगे? उसकी रिजल्ट का फल तो अब खाना है। अंत में तो उड़ जायेंगे। क्या उड़ने के बाद उसका अनुभव वर्णन करेंगे? कर्मातीत अवस्था का आनंद अगर शरीर छोड़ने समय अनुभव में आयेगा तो उसका वर्णन कब और कैसे करूँगी? कोई पूछे इस स्थिति का अनुभव क्या है, तो क्या हम उसको यह कहें कि जब शरीर छोड़ूँ तब पूछना?

मैं सदा उसी तख्त पर रहूँ जैसे मैं आज ही कर्मातीत हूँ, कल नहीं होऊँगी। उड़ने के बाद तो मैं सुनाऊँगी नहीं कि मैं कितनी ऊँच स्थिति पर हूँ। उससे तो मैं क्यों वह फल अभी खाऊँ। इसके लिए मैं आत्मा इतनी संपन्न रहूँ जो सर्व संबंधों, सर्व गुणों का, सर्व कलाओं का फल रोज़ खा सकूँ। हमें तो उस स्थिति का बहुत मजा आता।

उस स्थिति में कोई चिंता नहीं। अहम्–वहम् नहीं। सब बातों से परे, आवाज़ से परे अपनी स्थिति शांति की शैया पर निरंतर रहती। इसलिए न कोई हलचल है, न कोई बात। मैं तो ट्रांसपरेंट फ़रिश्ता हूँ। अन्दर–बाहर साफ–स्वच्छ हूँ। बाबा ने मुझे आप समान बनने का वरदान दिया है। बाबा कहे, तू फ़रिश्ता हो, फिर मैं क्यों कहूँ आप ऊँचे हो मैं नीची हूँ।

जब मैं किसी के चेहरों पर हलचल देखती तो मुझे आश्चर्य लगता। तेरी–मेरी अनेक बातें दिमाग में भरकर अपनी बुद्धि की शक्ति व्यर्थ क्यों गँवाते? बाबा हमारी बुद्धि में सर्व रसनायें भरता और हम अपनी बुद्धि को उससे कट कर नीचे ले आते। तो क्या यह बाबा की अवज्ञा नहीं है? यह मनमत नहीं है? मैं क्यों मनमत के संकल्प करूँ?

ओम् शांति।